अन्तर्राष्ट्रीय दिगम्बर जैन मुमुक्षु महासंघ के तत्त्वावधान में
श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा
तीर्थधाम सिद्धायतन में आयोजित

श्री महावीरस्वामी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

(मंगलवार, दिनांक 5 फरवरी से सोमवार, 11 फरवरी, 08 तक)

मंगलमय आमंत्रण

तीर्थधाम सिद्धायतन

जिनशासन का श्रेष्ठतम मंगलमय अनुष्ठान ।
भविजन सभी पधारिये प्रभु का पंचकल्याण ।।
महा महोत्सव में स्वागत है, शुद्धातम के रसिक जनों का ।
सिद्धआयतन में आमंत्रण सिद्ध समान भविक जनों को ।।

तीर्थधाम सिद्धायतन

विशेष आकर्षण ह्न * ध्रुवधाम बांसवाड़ा एवं सिद्धायतन द्रोणगिरि के छात्रों द्वारा आकर्षक कार्यक्रम। * 10 फरवरी को ज्ञान कल्याणक के अवसर पर समवशरण जिनालय में निर्मित 18 जिनवाणी मंदिरों में जिनवाणी एवं गुरु चरण वेदी पर आचार्यों भगवंतों के चरणों की स्थापना। * गुरुदेवश्री की 120वीं जन्म जयन्ती के प्रतीक स्वरूप विद्यमान 20 तीर्थंकर जिनालय पर मार्बल के आकर्षक 120 कलशों की स्थापना।

कार्यक्रम स्थल ह्न तीर्थधाम सिद्धायतन, द्रोणगिरि, बड़ामलहरा, जि.-छतरपुर।

कैसे पहुँचे द्रोणगिरि ह्न मुम्बई की ओर से आनेवाले सागर (कामायनी एक्स.1071) अथवा ललितपुर (पंजाब मेल-2137) उतरें। सागर से बड़ामलहरा होकर बस द्वारा 3 घण्टे में तथा ललितपुर से वाया बानपुर, टीकमगढ, घुवारा होकर 3 घण्टे में पहुँच सकते हैं। **दिल्ली रूट** से आनेवाले लोग झांसी उतरें, वहाँ से बस द्वारा छतरपुर, बड़ामलहरा होकर 4 घण्टे में पहुँच सकते हैं। जयपुर/कोटा से आनेवाले (दयोदय एक्स-2182) द्वारा सागर उतरें।

निवेदक

* **अध्यक्ष-** चंद्रभान जैन, 9993403851 * **मंत्री-** मस्तांई प्रेमचंद जैन, 9981055460 एवं समस्त ट्रस्टीगण, श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट
* **अध्यक्ष-** सेठ गुलाबचंद जैन-9425170989 * **महामंत्री :** पं.अभयजी शास्त्री-9420225393 एवं सभी सदस्यगण, महावीरस्वामी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति

सम्पर्क ह्न डॉ.गुलाबचन्द जैन-9893236368, सिद्धायतन-9425305708, 9754156849

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 26 295 अंक : 7

चिन्मूरत दृगधारी ....

चिन्मूरत दृगधारी की मोहे, रीति लगत है अटापटी।।टेक।।

बाहिर नारकी कृत दुःख भोगै, अंतर सुखरस गटागटी।
रमत अनेक सुरनि संग पै तिस, परिनतितैं नित हटाहटी।।1।।

ज्ञानविरागशक्ति तैं विधिफल, भोगत पै विधि घटाघटी।
सदननिवासी तदपि उदासी, तातैं आस्रव छटाछटी।।2।।

जे भव हेतु अबुध के ते तस, करत बंध की झटाझटी।
नारक पशु तिय षँढ विकलत्रय, प्रकृतिन की है कटाकटी।।3।।

संयम धर न सकै पै संयम, धारन की उर चटाचटी।
तासु सुयश गुन की 'दौलत' के, लगी रहै नित रटारटी।।4।।

ह्न पण्डित दौलतरामजी

* * *

पराश्रय से संसार, स्वाश्रय से मुक्ति

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 45 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

परः परस्ततो दुःखमात्मैवात्मा ततः सुखम् ।
अत एव महात्मानस्तन्निमित्तं कृतोद्यमाः ।।45।।

पर तो पर ही है, उसके लक्ष्य से दुःख होता है तथा आत्मा, आत्मा ही है, उसके लक्ष्य से सुख होता है। इसलिये सर्व महात्माओं ने आत्मा के लिये ही उद्यम किया है।

(गतांक से आगे ...)

भगवान आत्मा विकल्परहित निर्विकल्प चिदानन्द मूर्ति है, उसमें जो रागादि मानते हैं, वे अनात्मा हैं और जो अनात्मा से लाभ माने वे मिथ्यादृष्टि हैं।

भाई ! यह तो न्याय से समझनेवाली बात है। यहाँ कोई कहे कि ऐसी बात करने से लोक में उत्साह भंग हो जाता है, तो उससे कहते हैं बाहर में उत्साह भंग हो और अन्दर में समाये तभी आत्मा को लाभ होगा। भगवान आत्मा ही लाभ का कारण है। जो जीव ऐसे शुद्धचिद्घन प्रभु का आश्रय करते हैं, उनको सुखरूप दशा प्रगट होती है। सम्यक्दर्शन-ज्ञान-चारित्र भी अपने आत्मा के आश्रय से ही प्रगट होते हैं; कषाय की मंदता से नहीं ।

लोग ऐसा कहते हैं कि - इस जीव को तीर्थंकर नामकर्म बँधा है; इसलिये केवलज्ञान होगा। पर.. तीर्थंकर नामकर्म के परमाणु तो जड़ हैं, उनसे केवलज्ञान कैसे होगा ? वह तो बंधभाव है। बंधभाव दुःखरूप है, उसका अभाव करके ही अबंधस्वभाव प्रगट होगा। तीर्थंकर होनेवाले जीव भी ऐसा ही मानते हैं कि यह शुभभाव हमें दुःखरूप है। शुभकर्म का बंध तो दुःखरूप है ही, पर शुभभाव भी दुःखरूप ही है; क्योंकि वह भी सुख का घातक है। यह बात मानना लोगों को कठिन पड़ता है.. पर क्या करें ? वस्तुस्वरूप ही ऐसा है।

जब आत्मा कभी तीर्थंकर गोत्र के योग्य अथवा आहारक शरीर के योग्य किसी भी प्रकार के शुभभावरूप ही नहीं हुआ तो उससे आत्मा को लाभ कैसे होगा ? आत्मा कभी पर के रागरूप नहीं हुआ और परद्रव्य के रागादि कभी आत्मारूप नहीं हुए। तीर्थंकर नामकर्म को आत्मा अपना बना ले ह्न ऐसी आत्मा में कोई शक्ति ही नहीं; तो फिर उस भाव से आत्मा को लाभ कैसे होगा ?

अपने ज्ञानस्वरूप चिदानन्द स्वभाव में एकाग्र होना ही वास्तविक ज्ञानदान है, उसमें से केवलज्ञान होता है। पर को समझाने के विकल्प से केवलज्ञान नहीं होता।

परद्रव्य की तरफ लक्ष्य जाना ही दु:खरूप है। इस जीव की खोटी बुद्धि, पर जीवों को समझाने से लाभ मानती है; इसलिये यह दूसरे को समझाने में ही काल गवांता है। स्वयं अन्दर में समाने का तो इसे समय ही नहीं मिलता।

शुद्धचैतन्यघन आत्मा में ऐसी ताकत नहीं कि पर को अपने समान बना ले अथवा स्वयं पर के समान बन जाए। जब आत्मा रागरूप ही नहीं होता तो पररूप कैसे होगा ? आत्मा तो सदा वीतरागस्वरूप ही रहता है, उसका आश्रय करने से पर्याय में सुख प्रगट होता है।

अहाहा ! भगवान आत्मा दु:ख का विषय ही नहीं, उसे जो विषय बनावे वह सुखी हो और उसे छोड़कर अन्य किसी को विषय बनाये तो दु:ख हो। शुभाशुभभाव दु:खरूप हैं; क्योंकि उनका विषय परद्रव्य हैं।

भगवान आत्मा अपने शुद्धस्वरूप को छोडकर तीनकाल में कभी भी रागरूप अथवा दु:खरूप नहीं हुआ, दुख का विषय भी नहीं बना। ऐसा आत्मस्वभाव होने से बड़े-बड़े महापुरुषों ने अन्तरदृष्टि करके स्वरूप में समाने का प्रयत्न किया है।

जिसकी दृष्टि में विपरीतता है, वे भले ही ऐसा माने कि समाज को समझाने से लाभ होगा; पर ऐसी दृष्टि से समाज को कोई लाभ नहीं होता। अपने को लाभ तो होता ही नहीं; पर दृष्टि के मिथ्या होने से समाज के वास्तविक लाभ में निमित्त भी नहीं होता। यह शुभ विकल्प अनात्मा है और अनात्मा से आत्मा को लाभ कभी नहीं होता।

सोलहकारण भावना भाने से तीर्थंकर प्रकृति बँधती है कि नहीं ?

यहाँ कहते हैं कि सोलहकारण भावनारूप आत्मा होता ही नहीं और सोलहकारण भावना आत्मरूप नहीं होती। भगवान आत्मा शांति का दल है तो शांति का दल विकल्परूप कैसे होगा ?

यह तो वीतराग सर्वज्ञ भगवान का कहा गया सत्य मार्ग है। अन्दर का कोई अलौकिक मार्ग है। परद्रव्य के आश्रय से, उसके विशेष के आश्रय से तो कुछ होता ही नहीं है। स्वयं के विशेष का आश्रय छोड़कर सामान्य निजद्रव्यस्वभाव का आश्रय करे तो संवर-निर्जरारूप मोक्षमार्ग की विशेषता प्रगट हो। इसी मार्ग पर चलकर संतों ने स्वरूप में एकाग्रता करके मोक्ष का साधन प्रगट कर लिया है।

व्यवहाररत्नत्रय के शुभविकल्प रूप आत्मा नहीं होता और व्यवहाररत्नत्रय आत्मारूप नहीं होते; माने व्यवहाररत्नत्रय से आत्मा को लाभ नहीं होता।

एकमात्र सामान्य स्वरूप के आश्रय से स्थिरता प्रगट करने में ही लाभ है। इसी के आश्रय से तीर्थंकरादि महापुरुषों ने अपने स्वरूप में स्थिरता करके अनेक प्रकार के तपादिक का उद्यम किया है।

किसी भी प्रकार की इच्छा दु:खरूप ही है ह्न ऐसा जानकर आत्मा के आश्रय से इच्छाओं का निरोध कर महापुरुषों ने आत्मस्थिरतारूप तप किया है। इसी से महापुरुषों को संवर-निर्जरारूप शुद्धि का महान लाभ हुआ है।

तपादिक अनुष्ठानों का उद्यम निद्रा-आलस से रहित होकर अप्रमत्तपने करें तो आत्मस्थिरता प्राप्त हो। स्वभाव की जागृति में निद्रा-आलस्य आड़े नहीं आते। इसी जागृति से पुरुषार्थ करके महापुरुषों ने अपने को केवलज्ञान से शोभायमान किया है।

इस गाथा की टीका में कहा है कि परलक्ष ही दु:खरूप है और रागरहित चैतन्यप्रभु की दृष्टि और स्थिरता प्रगट करना ही सुखरूप है ह्न ऐसा जानकर एकमात्र अपना हित चाहनेवाले महापुरुषों ने आत्मा में एकाग्रता का पुरुषार्थ करके केवलज्ञान प्रगट किया है। ●

परमाणु द्रव्य

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 26 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

अत्तादि अत्तमज्झं अत्तंतं णेव इंदियग्गेज्झं।
अविभागी जं दव्वं परमाणु तं वियाणाहि ।।26।।

स्वयं ही जिसका आदि है, स्वयं ही जिसका मध्य है और स्वयं ही जिसका अंत है; अर्थात् जिसके आदि, मध्य और अंत में परमाणु का निजस्वरूप ही है, जो इन्द्रियों से ग्राह्य जानने में आने योग्य नहीं है और जो अविभागी है, वह परमाणु द्रव्य है ह्न ऐसा जानना।

(गतांक से आगे)

सहज परमपारिणामिक भाव की विवक्षा से आत्मा का स्वभाव निश्चय ध्रुव एकरूप है। विकारी दशा, सविकारी अपूर्ण दशा या पूर्ण अविकारी दशा पर्याय में होती है। इसे गौण करें तो जीव तो त्रिकाल स्वभाव की अपेक्षा नित्य निगोद या अनित्य निगोददशा से लेकर सिद्धदशा पर्यंत रहता हुआ अपने स्वरूप से च्युत नहीं हुआ है।

वास्तव में तो आत्मा स्वभावदृष्टि से परमपारिणामिकभाव का आश्रय करने वाला है। पर्याय की अपेक्षा से पर का आश्रय करनेवाला कहा जाता है।

एकरूप रहनेवाले भाव की अपेक्षा से देखें तो निगोद के जीवों का स्वरूप भी त्रिकाल स्वभाव से च्युत नहीं हुआ है, वह भी निश्चयनय से अपने स्वरूप से अच्युत है। 'च्युत हुआ' अथवा 'मुक्त हुआ' ह्न ऐसा तो पर्याय अपेक्षा से कहा जाता है, यह व्यवहारनय का विषय है।

जैसे सोना तो एकरूप है। उसे कुंडलादि अवस्थाएँ गौण करके देखें तो सोना तो सोना ही है। सोना अपने स्वभाव से च्युत नही हुआ; उसीप्रकार वर्तमान पर्याय

को गौण करें तो जीव अपने स्वभाव से च्युत नहीं है। सभी आत्माएँ त्रिकाल सिद्धसमान हैं। यह जीव स्वयं ही भगवान है, परमात्मा है। पर्याय को गौण करें तो अनादि-अनंत चिदानन्द प्रभु है, सम्यग्दर्शन का विषय है। यह वस्तु का स्वभाव है, इसे समझे बगैर क्रियाकाण्ड करे तो उससे धर्म का कोई संबंध नहीं।

जैसे कोई मनुष्य निर्धन से सधन हुआ या सधन से निर्धन हुआ तो भी उसमें मनुष्यपने की दृष्टि से कोई अंतर नहीं आया है; वैसे ही आत्मा संसारदशारूप हो या मोक्षदशारूप हो, पर वह जड़ नहीं होता है। जैसे मनुष्य मनुष्यपने से च्युत नहीं होता, वैसे ही आत्मा चाहे निगोद में हो या सिद्धदशा में हो जीव तो जीव ही है, वह स्वभाव से च्युत नहीं होता। स्वरूप से च्युत हो जाये तो वस्तु का ही अभाव हो जाये।

यहाँ टीकाकार मुनिराज परमाणु को आत्मा के साथ जोड़कर उदाहरण के द्वारा समझाते हैं कि पंचमभाव की अपेक्षा से परमाणुद्रव्य का परमस्वभाव स्वयं ही अपनी परिणति का आदि है और स्वयं ही अपनी परिणति का अंत भी है।

वह आदि में भी स्वयं ही, मध्य में भी स्वयं ही एवं अंत में भी स्वयं ही है; क्योंकि वह अपने निजस्वरूप से च्युत नहीं हुआ। प्रत्येक वस्तु अपने आदि, मध्य और अंत में रहती है। परिणति कहने से पर्याय का वर्णन नहीं हो रहा है, अपितु आदि, मध्य और अंत ह्न ऐसे तीन प्रकार बताने के लिए परिणति शब्द का प्रयोग किया गया है, पर बात तो द्रव्य की ही है।

परमाणु होने से वह इन्द्रियगोचर नहीं है, पवन-अग्नि आदि द्वारा नाश को प्राप्त नहीं होता और अविभागी है। अत: हे शिष्य ! तू उसे परमाणु जान।

राग से अथवा पर से ज्ञान नहीं होता ह्न ऐसा स्वसंवेदन ज्ञान होने से परमपना आता है ह्न ऐसा तू जान। प्रत्येक परमाणु द्रव्य-गुण-पर्यायस्वभाववाला होने से परमस्वभावी है। ऐसे परमाणु के स्वभाव का वर्णन करके यहाँ आचार्यदेव आत्मा के भी ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव को बताते है। ✻

छहढाला प्रवचन

नारकियों के दुःखों का विशेष कथन

तीन लोक को नाज जु खाय, मिटे न भूख कणा न लहाय।
ये दुःख बहुसागर लों सहे, करम जोगतें नरगति लहे।।१२।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

जो तिर्यंच या मनुष्य पाप करता है, वह नरक में जाता है। एक मनुष्य जो कि कसाई था, वह मुर्गी के कितने ही छोटे-छोटे बच्चों को पकड़कर, उनके पंख अपने हाथों से ऐसे तोड़ता था ह्न मानो वनस्पति के पत्ते तोड़ रहा हो। पंख तोड़ने के बाद उन जिन्दे बच्चों को बेसन में मिलाकर, उबलते हुए तेल में पकाकर उनकी पकौड़ी बनाता था। अरे रे ! ऐसे क्रूर परिणामवाला जीव नरक में न जाये तो और कहाँ जाये?

मृग और उस जैसे निर्बल प्राणी जो कि किसी को त्रास नहीं देते और मात्र घास खाकर जीते हैं, उनको भी शिकारी लोग बन्दूक की गोली से अत्यंत निर्दयता से मार देते हैं। एक मनुष्य ने गोली लगाकर हिरन को वेध डाला और बेचारे उस तड़पते हुए हिरन के पास में जाकर कूदता हुआ खुशी मनाने लगा। अरे, ऐसे पापी लोग नरक में नही जायेंगे तो और कहाँ जायेंगे?

वीतरागी देव-गुरु-धर्म के ऊपर उपद्रव करनेवाले, तीव्र आरम्भ-परिग्रह व हिंसा में ही जीवन बितानेवाले, मांस-मद्य-मदिरा-शिकार-मच्छी-अण्डे-परस्त्री आदि का सेवन करनेवाले महापापी जीव मरकर नरक में जाते हैं और वहाँ अपने पापों का फल भोगते हैं। नरक में पीने को पानी की बूंद या खाने को अन्न का दाना भी नहीं मिलता; अनन्त भूख-प्यास से वे जीव पीड़ित रहते हैं। धर्म की विराधना करने से ही जीव को ऐसा दुःख भोगना पड़ता है। आत्मा के स्वभाव की आराधना का सुख अनन्त है और उसकी विराधना का दुःख भी अनन्त है। जो स्वभाव सो सुख; जो विभाव वह दुःख ह्न यदि इतना मूल सिद्धान्त समझ ले तो जीव संयोग को दुःखरूप न मानकर दुःखरूप विभावों से हट जाये और अपने सुखस्वभाव के सन्मुख होकर उसका अनुभव करे।

अनादिकाल से मिथ्यात्व के कारण जीव अकेला दुःख ही भोग रहा है। कभी साता की अनुकूल सामग्री मिलने पर उसमें वह सुख मानता है, परन्तु वह मात्र कल्पना ही है, वास्तविक सुख नहीं। एक जगह कहा भी है कि इस संसार में जो दुःख है, वह तो दुःख है ही, परन्तु जो सुख है, वह भी सच्चा सुख नहीं है, वह तो अज्ञानीजनों की कल्पना मात्र ही है। जो आत्मिक सुख है, वही सच्चा सुख है; परन्तु वह आत्मज्ञान के बिना अनुभव में नहीं आ सकता। इस कारण अज्ञानी सदा दुःखी ही रहता है। अच्छा खाना-पीना मिले तो भी मोह से वह जीव दुःखी ही है।

अरे ! सुवर्ण के थाल में इच्छित भोजन खा रहा हो, उस वक्त भी जीव दुःखी ! और नरक में भाले से शरीर बेधा जाता हो, उस वक्त भी सम्यग्दृष्टि जीव सुखी ! ह्न यह बात बाह्यदृष्टि वाले लोगों को कैसे दिखेगी? उसके लिये तो अन्तर की दृष्टि होना चाहिए। जितनी स्वभाव की परिणति उतना सुख और जितना विभाव उतना दुःख ह्न यह सिद्धांत संयोगदृष्टि द्वारा समझ में नहीं आ सकता। संयोग का तो जीव में अभाव है; किन्तु अज्ञानी जीव को ऐसा भ्रम है कि संयोग के बिना मैं नहीं रह सकता। आहार-जल के बिना या शरीर के बिना मैं कैसे जी सकूँगा? ऐसे भ्रम के कारण वह संयोगों के सामने ही देखता रहता है और उनसे ही अपने को सुखी-दुःखी मानता है।

भाई ! नरक में तू अनंतकाल तक आहार-पानी के बिना ही रहा, वहाँ असंख्यवर्षों तक आहार-पानी न मिलने पर भी अपनी आयु से टिका ही रहा, मर नहीं गया।

अतः परवस्तु के बिना मैं नहीं रह सकूँगा ह्न ऐसे भ्रम को निकाल दे और संयोग से भिन्न अपने आत्मस्वभाव को देख ! तुझे अपूर्व शांति मिलेगी।

जीवों को संयोगबुद्धि होने से यहाँ प्रतिकूल संयोगी के कथन के द्वारा नरकादि के दुःखों का ख्याल कराया है। नरक में जीव ने जो दुःख भोगे, उसकी क्या बात? भाई, ऐसा दुःख तुमने तुम्हारी भूल से ही भोगे हैं, किसी दूसरे ने तुमको दुःखी नहीं किया।

अतः अपनी भूल को मिटाकर चैतन्यस्वभाव की आराधना करो, उससे ही दुःख का अभाव होगा और सच्चे सुख की प्राप्ति होगी।

इसप्रकार नरकगति के दुःखों का वर्णन और उससे छूटने का उपदेश दिया। नरक के दुःखों से निकलकर यह जीव कदाचित् शुभपरिणामों से मनुष्य हुआ तो मनुष्यभव में भी इसने आत्मज्ञान के बिना कैसे-कैसे दुःख भोगे ? इसका वर्णन आगे करेंगे। ✻

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : स्वच्छन्दता का क्या अर्थ है ?

उत्तर : विकारी पर्याय मेरी नहीं है ह्न ऐसा मानकर विकार का सेवन करे, अशुद्धता चाहे जितनी होती जाए; तथापि उसका सेवन करता रहे और ज्ञानवन्त को भोग निर्जरा का हेतु हैं ह्न ऐसा पढ़कर मानने लगे कि हमारे भी भोग के भाव से, विषय-वासना के भाव से निर्जरा हो रही है ह्न वह स्वच्छन्दी है। पर्याय में चाहे जैसा विकार हो तो भी हमें क्या ? ह्न ऐसा माने वह स्वच्छन्दता है। सच्चा मुमुक्षु ऐसी स्वच्छन्दता का सेवन नहीं करता। सच्चा मुमुक्षु पर्याय में विकार हो उसे अपना अपराध समझता है ह्न ज्ञान में उसे बराबर जानता है। वह पाप से अनभिज्ञ नहीं रहता, उसका हृदय करुणा और वैराग्य से ओतप्रोत होता है।

प्रश्न : एक ओर देह को भगवान आत्मा का देवालय कहा जाता है; दूसरी ओर उसे मृतक कलेवर कहते हैं तो सही है क्या ?

उत्तर : देह तो मृतक कलेवर ही है, यही सत्य है; पर भगवान आत्मा की महिमा बताते हुए देह में देवालय का उपचार करके भी देह की महिमा की जाती है।

प्रश्न : द्रव्यपरमाणु और भावपरमाणु के ध्यान से केवलज्ञान होता है। इसका क्या अर्थ है ?

उत्तर : द्रव्यपरमाणु अर्थात् आत्मद्रव्य और भावपरमाणु अर्थात् शुद्ध निर्मलपर्याय। आत्मद्रव्य के ध्यान से शुद्धपर्याय और मोक्ष होता है।

प्रश्न : जड़ में अनुभूति होती है क्या ?

उत्तर : हाँ, जड़ में भी अनुभूति होती है। उत्पाद-व्यय-ध्रुवरूप परिणमन करना ही जड़ में अनुभूति होना कहा जाता है।

प्रश्न : यह सारा प्रवचन सुनने के बाद स्मरण नहीं रहता, इसके लिये क्या करें?

उत्तर : यदि किसी व्यक्ति ने अपने को कोई चुभती हुई गाली दी हो तो वह तो

याद रहती है न ? तो फिर गुण याद क्यों नहीं रहते ?

वास्तविकता तो यह है कि अपने को अपनी सच्ची दरकार नहीं है, इसलिये विस्मरण हो जाते हैं; यदि सच्ची दरकार हो,तो अवश्य स्मरण रहे ही।

प्रश्न : शास्त्र में मनुष्य के शरीर में कितने रोग होना कहा है ?

उत्तर : भाव पाहुड़ गाथा 37 में कहा कि इस मनुष्य के शरीर में एक-एक अंगुल स्थान में छियानवे-छियानवे रोग होते हैं। (इस हिसाब से समस्त शरीर में पाँच करोड़ अड़सठ लाख निन्यानवे हजार पाँच सौ चौरासी रोग रहते हैं। ह्न 5,68,99,584)

प्रश्न : आप प्रवचनसार की अपेक्षा समयसार का अत्यधिक बखान करते हो। इसका क्या कारण है ?

उत्तर : प्रवचनसार में ज्ञानप्रधान कथन है और समयसार में दृष्टि कराने के प्रयोजन का कथन मुख्य है। समयसार में विकार को पुद्गल के लक्ष्य से उत्पन्न होता होने से और वह जीव का स्वभाव-भाव न होने से उसकी दृष्टि छुड़ाकर द्रव्य की दृष्टि कराने का कथन मुख्य है और उस द्रव्यदृष्टि से ही सम्यग्दर्शन तथा मोक्षमार्ग का प्रारंभ होता है।

प्रश्न : दर्शनमोहनीय की एक प्रकृति का नाम'सम्यक्त्व-प्रकृति' क्यों है ?

उत्तर : क्योंकि उसके उदय के साथ सम्यक्त्व भी होता है। अर्थात् सम्यक्त्व का सहचारी होने से उसका नाम'सम्यक्त्व-प्रकृति' पड़ा है। क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के साथ उसका उदय होता है।

प्रश्न : संख्या की अपेक्षा से बड़े से बड़ा अनन्त कौन ?

उत्तर : केवलज्ञान का अविभाग प्रतिच्छेद सबसे महान अनन्त है। अलोकाकाश के प्रदेश इत्यादि दूसरे अनन्त से भी वह अनन्तगुना है ह्न ऐसा कहकर भी उसका माप नहीं निकाला जा सकता। आत्मद्रव्य की यह कोई अचिन्त्य शक्ति है। जिसप्रकार विकल्प से उसकी शक्ति का पार नहीं पाया जा सकता; उसीप्रकार गणित से भी उसकी शक्ति का पार नहीं पाया जा सकता।

समाचार दर्शन ह्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का ह्न

28 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन उदयपुर में सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल उदयपुर द्वारा दिनांक 23 दिसम्बर से 1 जनवरी, 08 तक आयोजित श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर 23, 24 एवं 25 दिसम्बर, 07 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 28 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ।

दिनांक 23-24 दिसम्बर,07 को राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदाधिकारियों, कार्यकारिणी एवं प्रान्तीय पदाधिकारियों की मीटिंग एवं शाखा सदस्यों के साथ ओपन मीटिंग के कुल 8 सत्रों में फैडरेशन द्वारा अभी तक किए गए कार्यों की समीक्षा करते हुए यह बात गंभीरता से महसूस हुई कि वर्तमान परिस्थितियों में आत्मानुभूति और तत्त्वप्रचार के अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु फैडरेशन का कार्य और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

25 दिसम्बर को सायं 7:30 बजे से आयोजित फैडरेशन के राष्ट्रीय अधिवेशन की सभा की अध्यक्षता राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अखिल बंसल, जयपुर ने की। गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के चित्र का अनावरण करके अधिवेशन का उद्घाटन श्रीमान ताराचंदजी फालेजिया सेमारी वालों ने किया। मुख्य अतिथि श्री ताराचंदजी जैन (जिलाध्यक्ष भा.ज.पा.) विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जयन्तीभाई डी. शाह बोरोवली मुंबई, श्री भागचंदजी कालिका उदयपुर, श्री आई.एस.जैन मुंबई, श्री सुजानमलजी गदिया उदयपुर, श्री लक्ष्मीलालजी बण्डी उदयपुर मंचासीन थे। विद्वत्वर्ग में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया मंगलायतन, पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा, पण्डित विपिन शास्त्री (श्योपुर) मुम्बई के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान भी मंचासीन थे।

राजस्थान प्रान्त के उपाध्यक्ष पण्डित अजित शास्त्री अलवर ने मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम की शुरुआत की। पण्डित महावीरप्रसादजी शास्त्री, उदयपुर (प्रदेश उपाध्यक्ष राज.प्रान्त) ने सभी मंचासीन अतिथियों की स्वागत विधि के साथ-साथ स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

राजस्थान प्रान्त में फैडरेशन की गतिविधियों की रिपोर्ट पण्डित अजितकुमार शास्त्री अलवर ने प्रस्तुत की। इसके अतिरिक्त श्रीमती किरण जैन जिलाध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ उदयपुर ने उदयपुर जिले की महिला शाखाओं की रिपोर्ट, श्रीमती आशा पांड्या ने मुमुक्षु मण्डल उदयपुर शाखा की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने फैडरेशन को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए युवकों का आह्वान किया।

जो शाखायें अधिवेशन में नहीं आ सकीं, उनके द्वारा प्रेषित रिपोर्ट को राष्ट्रीय संगठन मंत्री पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने प्रस्तुत किया।

इसके पश्चात् अधिवेशन सभा का संचालन कर रहे फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल द्वारा फैडरेशन के आगामी कार्यक्रमों की घोषणा की गई।

सभा की अध्यक्षता कर रहे फैडरेशन के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष अखिल बंसल ने फैडरेशन के निवर्तमान अध्यक्ष ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के प्रति धन्यवाद प्रस्ताव रखा, जिसे सभा ने करतल ध्वनि से स्वीकृत किया। तत्पश्चात् **निर्देशक मण्डल द्वारा मनोनीत फैडरेशन के नवीन राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में श्री विपुल कान्तिभाई मोटानी मुम्बई एवं राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल की नियुक्ति की घोषणा की तत्पश्चात् महामंत्री श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल द्वारा पूरी कार्यकारिणी की घोषणा की गई।**

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में फैडरेशन के संस्थापक श्री अखिल बंसल ने उन तात्कालिक परिस्थितियों की चर्चा की, जिन कारणों से फैडरेशन की स्थापना की गई।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में समाज की तत्कालीन एवं वर्तमान स्थितियों का जिक्र करते हुए फैडरेशन द्वारा किये गये कार्यों की प्रशंसा की तथा वर्तमान संदर्भों में फैडरेशन की और अधिक सक्रिय भूमिका पर बल दिया। आपने कहा कि कोई भी संस्था की उम्र लम्बी तब तक नहीं हो सकती है जब तक वह अपनी गतिविधियों को निरन्तरता प्रदान नहीं करे। हमारे युवा फैडरेशन की प्रमुख विशेषता है कि वह समाज में युवाओं के साथ-साथ बच्चों में धर्म के संस्कार को देने के कार्य के साथ ही समाज के शैक्षणिक, नैतिक उत्थान का कार्य भी निरंतर करता है। फैडरेशन के द्वारा किसी के भी विरुद्ध किसी भी प्रकार के आन्दोलन, धरने, प्रदर्शन, आदि कार्य नहीं किये जाते हैं; अपितु युवाओं में व्याप्त अज्ञान, असदाचार, कुरीतियों को मिटाने का कार्य किया जाता है।

सभा को मुख्य अतिथि श्रीमान ताराचंदजी जैन (जिलाध्यक्ष भा.ज.पा.) एवं आई.एस.जैन मुम्बई ने भी संबोधित किया।

अंत में फैडरेशन के राष्ट्रीय गीत 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' के गान पूर्वक अधिवेशन का समापन हुआ। अधिवेशन में उपस्थित सभी शाखाओं को मुमुक्षु मण्डल उदयपुर द्वारा मेमेन्टो प्रदान किये गये। ●

अगला अधिवेशन तीर्थधाम मंगलायतन में

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 29 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन **24 एवं 25 मई,** 2008 को तीर्थधाम मंगलायतन में आयोजित होने जा रहा है।

इस अधिवेशन की तैयारी हेतु राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री नवनीत जैन मेरठ, श्री अशोक लुहाड़िया अलीगढ एवं दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री आदीशकुमार जैन दिल्ली को विशेषरूप से मनोनीत किया गया है।

सिद्धचक्र महामण्डल विधान सानन्द सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 23 दिसम्बर, 07 से 1 जनवरी, 08 तक श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल उदयपुर द्वारा श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन का 28 वें राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया गया। इसके साथ ही आध्यात्मिक प्रवचन शृंखला एवं युवा-वर्ग शिक्षण-शिविर का आयोजन भी सम्पन्न हुआ।

समारोह का शुभारंभ डॉ. हुकमचदजी भारिल्ल के करकमलों से ध्वजारोहणपूर्वक हुआ। प्रथम दिन विशाल शोभयात्रा निकाली गई। जिसमें डॉ. भारिल्ल को धर्मध्वज लेकर हाथी पर एवं अन्य विद्वानों को भी विशिष्ट वाहनों पर बिठाया गया।

इस अवसर पर तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के अध्यात्मरस से भरपूर प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री श्योपुर के समयसार पर हुए प्रवचनों को श्रोताओं ने चातक की भाँति भाव-विभोर होकर सुना।

इसी प्रसंग पर पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा, डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया मुम्बई एवं स्थानीय विद्वान डॉ. महावीरप्रसादजी टोकर, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री, पण्डित हेमंतकुमारजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रकुमारजी शास्त्री इत्यादि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर आयोजित श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान के आयोजन कर्त्ता श्री आई.एस.जैन मुम्बई थे। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, पण्डित चिन्मयजी शास्त्री एवं पण्डित आदित्यजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये।

दिनांक 28 दिसम्बर को रात्रि में ज्ञाताजी झांझरी उज्जैन के निर्देशन में मैनासुन्दरी नाटिका का सुन्दर मंचन किया गया। एक दिन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा 17 वर्ष की आयु में लिखे गये खण्ड काव्य 'पश्चाताप' का संगीतमय प्रस्तुतिकरण हुआ।

महोत्सव के दौरान डॉ. भारिल्ल के करकमलों से **धन्यमुनिदशा** प्रथम एवं द्वितीय भाग का विमोचन हुआ तथा श्री भागचन्दजी कालिका उदयपुर की ओर से 'चिन्तन की गहराईयाँ' नामक पुस्तक नि:शुल्क वितरित की गई।

इस अवसर पर लगभग 9 हजार 840 घंटों के सी.डी. प्रवचन एवं 40 हजार 700 रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को साहित्य की कीमत कम करने हेतु 15 हजार रुपये की दान राशि प्रदान की गई।

महिला प्रकोष्ठ का गठन

28 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के महिला प्रकोष्ठ का गठन किया गया तथा **डॉ.शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई** को इसका प्रभारी बनाया गया है।

जैन बाल संस्कार ग्रुप शिविर संपन्न

दिल्ली : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा के आयोजकत्व एवं आत्म साधना केन्द्र (आत्मार्थी ट्रस्ट) दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 23 से 30 दिसम्बर, 07 तक शीतकालीन 'जैन बाल संस्कार ग्रुप शिविर' का आयोजन किया गया; जिसमें दिल्ली, उत्तरप्रदेश एवं हरियाणा के कुल 17 स्थानों पर एक साथ शिविर लगा।

सम्पूर्ण शिविर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के निम्नांकित 27 विद्वानों के सहयोग से अनेक उपलब्धियों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर के अन्तर्गत **आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली में** पं. सी.बाबूजी शास्त्री, पं. जयकुमारजी शास्त्री, पं. प्रदीपजी शास्त्री, पं. गजेन्द्रजी शास्त्री एवं पं.अजयजी शास्त्री, **मयूर विहार में** पं. संदीपजी शास्त्री, **रघुवरपुरा में** पं. नितिनजी शास्त्री एवं पं.आशीषजी शास्त्री, **शिवाजी पार्क में** पं. प्रतीकजी शास्त्री एवं पं. अविनाशजी शास्त्री, **कैलाश नगर में** पं. वीरचंदजी शास्त्री, **शंकर नगर एक्स.में** पं. अचलजी शास्त्री, **विश्वास नगर में** पं. प्रसन्नजी शास्त्री, **न्यू उस्मानपुर में** पं. सुमितजी शास्त्री, **राजा बाजार में** पं. विशेषजी शास्त्री, **ओल्ड राजेन्द्र नगर में** पं.सुधीरजी शास्त्री, **आर्यपुरा में** पं. शशांकजी शास्त्री, **फरीदाबाद (हरियाणा) में** पं. सोमिलजी शास्त्री, **नोएडा (उ.प्र.) में** पं. मिलिंदजी शास्त्री, **बहादुरगढ़ (हरियाणा) में** पं. रविन्द्रजी शास्त्री, पं. कीर्तिकुमारजी शास्त्री एवं पं. नीतेशजी शास्त्री, **खेकड़ा (उ.प्र.) में** पं. शैलेन्द्रजी शास्त्री एवं पं. नीलेशजी शास्त्री, **सोनागिर सिद्धक्षेत्र में** पं. सचिनजी शास्त्री एवं पं. अंकितजी शास्त्री, **रोहिणी में** पं. अभिजीतजी शास्त्री आदि विद्वानों द्वारा प्रतिदिन प्रवचन, प्रौढ़-बाल कक्षा, पूजन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से महती धर्मप्रभावना हुई।

शिविर में लगभग 900 बच्चों एवं 400 महिला-पुरुषों ने तत्त्वज्ञान का रसास्वादन किया।

1 जनवरी 08 को आत्मार्थी ट्रस्ट में समापन समारोह के अवसर पर श्री सम्मेद शिखरजी विधान एवं नूतन वर्षाभिनंदन का कार्यक्रम रखा गया। इस प्रसंग पर ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हुआ। शिविर ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन तथा पं. राकेशजी शास्त्री, पं. ऋषभजी शास्त्री, पं. संदीपजी शास्त्री, पं. अमितजी शास्त्री, पं. सुरेन्द्रजी शास्त्री एवं पं. प्रमेशजी शास्त्री के कुशल संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ।

टोडरमल मुक्त विद्यापीठ के छात्रों हेतु...

जिन-जिन छात्रों ने टोडरमल मुक्त विद्यापीठ, जयपुर में अध्ययन हेतु प्रवेश-फॉर्म भेजे हैं, उन सभी को उनके नामांकन क्रमांक भेजे जा चुके हैं। सभी छात्र अपने-अपने निर्धारित कोर्स का अध्ययन प्रारंभ कर देवें। टेस्ट पेपर 8 फरवरी तक यहाँ से भेजा जावेगा, जिसे आपको 20 फरवरी तक भरकर भेजना है। फाईनल परीक्षा मध्य अप्रैल तक आयोजित की जावेगी।

पाठ्य पुस्तक टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के बिक्री विभाग को पत्र लिखकर मंगा सकते हैं।

ह्न नियंत्रक, परीक्षा विभाग, टोडरमल मुक्त विद्यापीठ

चेन्नई में व्याख्यानमाला

चेन्नई : यहाँ श्रीमद् राजचंद्र स्वाध्याय मण्डल (टी. नगर) के विशेष आमंत्रण पर 23 वर्षों बाद डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल चेन्नई पधारे। यहाँ के सुविख्यात हॉल सी.यू.शाह भवन में नूतनवर्ष के अवसर पर दिनांक 1 से 8 जनवरी, 08 तक प्रतिदिन दोनों समय आपके प्रवचनों की धूम रही। आपके द्वारा 'समयसार का सार' पर हुये दृष्टान्तपरक सारगर्भित व्याख्यानों को अपार भीड ने खूब सराहा। अन्तिम तीन दिनों में '**भगवान आत्मा और उसकी प्राप्ति के उपाय**' विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। आपने सायंकाल तत्त्वचर्चा में सभी सम्प्रदायों के साधर्मियों की शंकाओं का तार्किक शैली में रोचक ढंग से समाधान किया गया।

इसी अवसर पर प्रतिदिन दोनों समय ब्र. हेमचन्दजी हेम, देवलाली के प्रवचनसार पर प्रवचनों का लाभ भी मिला।

शनिवार दिनांक 5 जनवरी को रात्रि में डॉ.भारिल्ल द्वारा रचित खण्ड काव्य 'पश्चाताप' की सी.डी. द्वारा संगीतमय प्रस्तुति हुई।

अंतिम दिन दोनों विशिष्ट विद्वानों का श्री अरुण जैन (चेयरमेन-पोलारीस सोफ्टवेयर) एवं श्री शांतिभाई भायाणी ने सम्मान किया । संचालन श्री नवनीत पी. शाह ने किया।

इस अवसर पर 30 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं डॉ. भारिल्ल के 90 हजार 800 घण्टों के प्रवचन कैसिट्स (सी.डी.,डी.वी.डी.) घर-घर पहुँचे।

ज्ञातव्य है कि व्याख्यानमाला के दो दिन पूर्व दिनांक 30 एवं 31 दिसम्बर को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल **पौन्नूर हिल** पधारे, यहाँ श्री अनंतभाई ए. शेठ एवं श्री निमेषभाई शाह का पूरा परिवार उपस्थित था। क्षेत्र पर आपके समयसार का सार विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

मंदिर एवं स्वाध्याय भवन का शिलान्यास सम्पन्न

राघौगढ़ (म.प्र.) : यहाँ मुमुक्षु महासंघ के तत्त्वावधान में दिनांक 5 दिसम्बर, 07 को श्री चौबीस तीर्थंकर जिनमंदिर एवं स्वाध्याय भवन का शिलान्यास बाल ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के कुशल निर्देशन में श्री सुभाषचंद-श्रीमती राजमती जैन भोपाल एवं श्री विपिनकुमार-श्रीमती ज्योति जैन मलेशिया के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

स्वाध्याय भवन का शिलान्यास डॉ. कबूलचंद आनंदकुमार पांडे म्याना ने किया एवं ध्वजारोहण श्री नेमीचंदजी आमल्यावालों के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री चौबीस तीर्थंकर विधान के अतिरिक्त जयपुर से पधारे पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा के प्रवचनों का लाभ भी समाज को मिला।

वैराग्य समाचार

1. **रतलाम निवासी** श्री झमकलालजी बड़जात्या का दिनांक 18 दिसम्बर, 07 को शान्त परिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप गुरुदेवश्री की उपस्थिति में सोनगढ एवं तत्पश्चात् जयपुर शिविरों में भी नियमित रूप से उपस्थित रहते थे। रतलाम में संचालित होनेवाली तत्त्वज्ञान की गतिविधियों में आपका सक्रिय योगदान तो रहता ही था; इसके अलावा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा किये जा रहे तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के कार्यों में उनका एवं उनके परिवार का सदैव सहयोग बना रहता था। आपकी स्मृति में संस्था को 10 हजार रुपये की राशि प्राप्त हुई।

2. **व्हन्नूर निवासी सौ.विशल्या रायचंद दोशी** का दिनांक 10 दिसम्बर, 07 को 85 वर्ष की आयु में शान्त परिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। स्वामीजी के प्रवचनों का साक्षात् लाभ भी आपको प्राप्त हुआ। आपकी स्मृति में संस्था को 1002/- रुपये प्राप्त हुए हैं।

3. **बैंगलोर निवासी श्री एम. बी. पाटील** का दिनांक 30 नवम्बर, 07 को 77 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपको गुरुदेवश्री के प्रवचनों का साक्षात् लाभ प्राप्त हुआ था। आपने आचार्य कुन्दकुन्द विरचित ग्रंथाधिराज समयसार के साथ ही अन्य लगभग 50 से भी अधिक ग्रंथों का कन्नड़ भाषा में अनुवाद किया गया है। कर्नाटक प्रान्त में धार्मिक शिक्षण-शिविरों की सफलता एवं घर-घर में स्वाध्याय की रुचि आपकी ही प्रेरणा का परिणाम है। सन् 1978 से 29 वर्षों तक आप आत्मधर्म के संपादक भी रहे थे। आपके चिर वियोग से दि. जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, बैंगलौर एवं जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

4. आत्मधर्म (गुजराती) के सम्पादक **श्री नागरदास बेचरदास मोदी, सोनगढ़** का दिनांक 28 दिसम्बर,07 को 87 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया है। आप विगत 33 वर्षों से आत्मधर्म के सम्पादक थे। बोधि समाधी निधान, द्रव्यदृष्टि जिनेश्वर पर्यायदृष्टि विनश्वर एवं द्रष्टि का निधान आपके ही द्वारा सम्पादित कृतियाँ है।

5. टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक श्री प्रक्षाल शास्त्री के पिताजी **श्री चाँदमल संगावत,** उदयपुर का दिनांक 2 जनवरी, 08 को देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी स्वाध्यायी व्यक्ति थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही मुक्ति प्राप्त करें ह्न यही मंगल भावना है।

ब्र.यशपालजी द्वारा धर्म प्रभावना

ध्रुवधाम (बाँसवाड़ा) : यहाँ श्री आचार्य अकलंक न्याय विद्यालय, ध्रुवधाम में दिनांक 1 से 15 दिसम्बर तक प्रतिदिन ब्र. यशपालजी के प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक के पहले तथा रात्रि में दूसरे अधिकार के आधार से प्रवचन हुए तथा दोपहर में विद्यार्थियों हेतु 8 वें गुणस्थान से सिद्धावस्था तक के विषय पर विशेष कक्षाएँ ली गई। ज्ञातव्य है कि बाँसवाड़ा नगर में श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय के स्थापना के अवसर पर भी आपका एक प्रवचन हुआ।

शिखर कलशारोहण एवं ध्वजारोहण समारोह

शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 14 जनवरी, 08 को शिखर कलशारोहण एवं ध्वजारोहण समारोह अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

समारोह में इंजीनियर श्री साकेत जैन पुणे ने शिखर कलश भेंट किया एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने कलश स्थापित किया। इसके साथ ही इंजीनियर श्री नरेन्द्रकुमार आदित्यकुमारजी शिवपुरी ने ध्वज भेंट किया तथा पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने इसे चढाया।

समारोह के अवसर पर प्रात: शोभायात्रा एवं पंच परमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, जयपुर ने पण्डित अमितजी शास्त्री, लुकवासा के सहयोग से सम्पन्न कराये।

इस मांगलिक प्रसंग पर दोपहर में महावीर जिनालय में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के 'मैं स्वयं भगवान हूँ' विषय पर हुए प्रवचन का लाभ समाज को मिला।

समारोह के दौरान आधी कीमत पर 30 हजार रुपयों का साहित्य घर-घर पहुँचा।

ज्ञातव्य है कि इस समारोह का आयोजन इंजीनियर श्री सुरेशजी जैन शिवपुरी एवं उनके परिवार की ओर से किया गया था।

श्योपुर कलाँ (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 13 जनवरी, 08 को अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं जैनदर्शन के मनीषी विद्वान पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का अभिनन्दन बड़े धूमधाम से उत्साहपूर्वक किया गया।

इस अवसर पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के इन भावों का फल क्या होगा? एवं डॉ.भारिल्ल के अहिंसा के साथ-साथ एकता के पाँच सूत्र विषय पर मार्मिक प्रवचन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि- जिला कलेक्टर श्री शोभित जैन के प्रश्नों का भी डॉ.साहब ने तार्किक समाधान किया।

सभा के अध्यक्ष श्री कैलाशचंदजी, विशिष्ट अतिथि श्री चौथमलजी, श्री महेन्द्रकुमारजी एवं श्री नवीनजी (मैनेजर-एस.बी.आई.) थे। कार्यक्रम का संचालन श्री कैलाशचंदजी पाराशर एवं श्री विपिन शास्त्री श्योपुर ने किया। **ह्न नरेश जैन, शरद जैन**

प्रशिक्षण-शिविर : मंगलायतन में

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित 42 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ के आयोजकत्व में **रविवार, दिनांक 18 मई से बुधवार, दिनांक 4 जून, 08 तक तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ़** में लगना निश्चित हुआ है।

आयोजन में वयोवृद्ध विद्वान पण्डित कैलाशचन्दजी और तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का सान्निध्य एवं प्रवचनों का लाभ तो मिलेगा ही इसके अतिरिक्त अन्य अनेक विशिष्ट विद्वानों से भी सम्पर्क किया जा रहा है। **ह्न अशोक लुहाड़िया, निर्देशक**